बिरसा मुंडा : उलगुलान : धरती आबा

(15 नवंबर 1875 : 9 जून 1900)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : विकिपीडिया
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ,(उ.प्र.) – 09.06.2021
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

.....

बिरसा मुंडा : ब्रिटिश सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह करनेवाले पहले आदिवासी वीर थे : निशा डागर..

“मैं केवल देह नहीं
मैं जंगल का पुश्तैनी दावेदार हूँ
पुश्तें और उनके दावे मरते नहीं
मैं भी मर नहीं सकता
मुझे कोई भी जंगलों से बेदखल नहीं कर सकता
उलगुलान!
उलगुलान!!
उलगुलान!!!”

बिरसा मुंडा (Birsa Munda) की याद में’ शीर्षक से यह कविता आदिवासी साहित्यकार हरीराम मीणा ने लिखी है। ‘उलगुलान’ यानी आदिवासियों का जल-जंगल-जमीन पर दावेदारी का संघर्ष।

बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे। अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में उनकी ख्याति जग जाहिर थी। सिर्फ 25 साल के जीवनकाल में उन्होंने इतने मुकाम हासिल किये, कि हमारा इतिहास सदैव उनका ऋणी रहेगा।

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को वर्तमान, गांव-उलिहात, जिला-रांची (झारखंड) में हुआ था।

आपकी माता का नाम करमी हातू और पिता का नाम सुगना मुंडा था। उस समय भारत में अंग्रेजी शासन था। आदिवासियों को अपने इलाकों में किसी भी प्रकार का दखल मंजूर नहीं था। यही कारण रहा है, कि आदिवासी इलाके हमेशा स्वतंत्र रहे हैं। अंग्रेज़ भी शुरू में वहां जा नहीं पाए थे, लेकिन तमाम षड्यंत्रों के बाद वे आख़िर घुसपैठ करने में कामयाब हो ही गये।

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ़ पहली जंग!

बिरसा (Birsa Munda) पढ़ाई में बहुत होशियार थे। इसलिए लोगों ने उनके पिता से उनका दाखिला जर्मन स्कूल में कराने को कहा। पर इसाई स्कूल में प्रवेश लेने के लिए इसाई धर्म अपनाना जरुरी हुआ करता था, तो बिरसा का नाम परिवर्तन कर बिरसा डेविड रख दिया गया। कुछ समय तक पढ़ाई करने के बाद उन्होंने जर्मन मिशन स्कूल छोड़ दिया। क्योंकि बिरसा के मन में बचपन से ही साहूकारों के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह की भावना पनप रही थी। इसीलिए बिरसा ने जबरन धर्म परिवर्तन के खिलाफ़ लोगों को जागृत किया तथा आदिवासियों की परम्पराओं को जीवित रखने के कई प्रयास किया।

आदिवासियों के 'धरती पिता'

1894 में बारिश न होने से छोटा नागपुर में भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे समर्पण से अपने लोगों की सेवा की। **उन्होंने लोगों को अन्धविश्वास से बाहर निकलकर बिमारियों का इलाज करने के प्रति जागरूक किया। सभी आदिवासियों के लिए वे 'धरती आबा' यानि 'धरती पिता' हो गये।**

अंग्रेजों ने 'इंडियन फारेस्ट एक्ट 1882' पारित कर आदिवासियों को जंगल के अधिकार से वंचित कर दिया। अंग्रेजों ने ज़मींदारी व्यवस्था लागू कर आदिवासियों के वो गाँव, जहां वे सामूहिक खेती करते थे, ज़मींदारों और दलालों में बांटकर राजस्व की नयी व्यवस्था लागू कर दी। और फिर शुरू हुआ अंग्रेजों, जमींदारों व महाजनों द्वारा भोले-भाले आदिवासियों का शोषण। इसी शोषण के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी फूंकी बिरसा ने। अपने लोगों को गुलामी से आजादी दिलाने के लिए बिरसा ने **'उलगुलान' (जल-जंगल-जमीन पर दावेदारी)** की अलख जगाई।

1895 में बिरसा (Birsa Munda) ने अंग्रेजों की लागू की गयी ज़मींदारी प्रथा और राजस्व व्यवस्था के ख़िलाफ़ लड़ाई के साथ-साथ, जल-जंगल-ज़मीन की लड़ाई छेड़ी। यह कोई बग़ावत नहीं थी, बल्कि यह तो आदिवासी स्वाभिमान, स्वतन्त्रता और संस्कृति को बचाने का संग्राम था।

बिरसा ने 'अबुआ दिशुम, अबुआ राज' यानि 'हमारा देश, हमारा राज' का नारा दिया। देखते-ही-देखते सभी आदिवासी, जंगल पर दावेदारी के लिए इकट्ठे हो गये। अंग्रेजी सरकार के पांव उखड़ने गये। भ्रष्ट जमींदार व पूंजीवादी बिरसा के नाम से भी कांपते थे।

अंग्रेजी सरकार ने बिरसा के उलगुलान को दबाने की हर संभव कोशिश की, लेकिन आदिवासियों के गुरिल्ला युद्ध के आगे उन्हें सफलता नहीं मिली। 1897 से 1900 के बीच आदिवासियों और अंग्रेजों के बीच कई लड़ाईयां हुईं। पर हर बार अंग्रेजी सरकार ने मुंह की खाई।

बिरसा (Birsa Munda) को अंग्रेजों की तोप और बंदूकों की ताकत नहीं पकड़ पायी। उसके बंदी बनने का कारण अपने ही लोगों द्वारा धोखा देना था। जब अंग्रेजी सरकार ने बिरसा को पकड़वाने के लिए 500 रूपये की धनराशी के इनाम की घोषणा की, तो किसी अपने ही व्यक्ति ने बिरसा के ठिकाने का पता अंग्रेजों तक पहुंचाया।

जनवरी 1900 में उलिहातू के नजदीक, डोमबाड़ी पहाड़ी पर बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे, तभी अंग्रेज सिपाहियों ने चारो तरफ से घेर लिया। अंग्रेजों और आदिवासियों के बीच भयंकर लड़ाई हुई। औरतें और बच्चों समेत बहुत से लोग मारे गये। अन्त में बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ़्तार कर लिये गये।

बिरसा इस अपमान को न सह सके, और 9 जून 1900 को रांची के कारागार में आखिरी सांस ली।

आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को महामानव की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका मूर्ति भी लगी है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई-अड्डा भी है।

बिरसा के जाने के इतने सालों बाद, जल-जंगल-जमीन और स्वाभिमान की समस्या वहीं की वहीं बनी हुई है। आज भी उनका संग्राम जारी है। बहुत से आदिवासी संगठन हैं, जो जंगल पर दावेदारी के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं। इन सभी ने मिलकर बिरसा का उलगुलान जारी रखा है। इन सभी के प्रेरणास्रोत हैं बिरसा मुंडा।

आज 9 जून को भारतवर्ष के इस महान सपूत, आदिवासियों के धरती पिता, और उलगुलान के नायक, बिरसा मुंडा को विनम्र श्रद्धांजलि और शत्-शत् नमन्.....

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
7355175480